IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

सनातन धर्म : एक विहंगम विवेचन

डॉ॰ गौरव त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर -राजनीति विज्ञान

राजकीय पी जी कालेज, मुसाफिरखाना, अमेठी

tripathydrgaurav.gdc@gmail.com

सारांश

सनातन धर्म वैदिक व देवत तत्व के संयोग से बना है। यह हिंदुओं से सबंधित धर्म है । इसका आशय एक ऐसा धर्म है जो शाश्वत है।रामायण पुराण उपनिषद वेद आदि इसके मूल स्रोत हैं।वेद मे सनातन धर्म के चार स्रोत का वर्णन मिलता है।सनातन व्यवस्था के अन्तर्गत दो प्रकार के धर्म की परिचर्चा मिलती है।सनातन धर्म मे सत्य अहिंसा ब्रहचर्य,इंद्रिय निग्रह ,शील, मृदु वचन का बडा महत्व है।सनातन धर्म वर्ण धर्म का उल्लेख भी करता है।इसके अन्तर्गत वर्णों के लिए विहित कर्तब्यों का पालन करना जरूरी माना गया है।सनातन धर्म आश्रम धर्म के पालन पर जोर देता है।सनातन धर्म मे युग धर्म आपातकाल के धर्म व राजा के धर्म का पूरा वर्णन मिलता है।

मुख्य शब्द: सनातन, धर्म, वैदिक, उपनिषदीय परंपरा, वेदांग, वर्णाश्रम, आपद्धर्म, राजधर्म, युगधर्म , विशिष्ट धर्म , मनुस्मृति, नारदीयसूक्ति।

प्रस्तावना

वागार्थाविव संपृक्तौ वागार्थाविव प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वंदे पार्वती परमेश्वरौ।।[1]

महाकवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम में यह कहा कि जैसे पार्वती एवं परमेश्वर नित्य हैं और अंतर्संबद्ध हैं वैसे ही शब्द एवं अर्थ या वाणी और अर्थ अंतरगूंफित हैं। यही बात कुछ परिवर्तित करते हुए महान समाज वैज्ञानिक देरदां ने भी विखंडनवाद के सिद्धांत में दिया है। देरिदां का मत है कि किसी शब्द का अर्थ उसी में निहित है। केवल उस शब्द का विखंडन करते जाइए अर्थात तोड़ते जाइए । इस सिद्धांत का अनुप्रयोग यदि हम सनातन शब्द में करें तो निश्चितमेव हमें मूल अर्थ का ज्ञान हो जाएगा। सनातन शब्द के निर्माण के तह में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

जाते हैं और शब्द का विच्छेद करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह शब्द सदा +भावार्थे ट्युल् तुट् च नि.दस्य नः से बना है[2] अर्थात सदा शब्द में तुल्य प्रत्यय और तुट का गम ताकर को नकार करके सनातन शब्द का उद्भव हुआ है। इस शब्द का अर्थ है नित्यता ,स्थाई शाश्वत्ता।

यह उल्लेखनीय कि इसकी नित्यता की पृष्ठभूमि में प्राचीनता और नवीनता दोनों का विहंगम समावेशन है इसलिए यह शाश्वत है। सनातन धर्म के स्रोतों की मीमांसा करें तो हमें वैदिक धर्म में इसके संपूर्ण लक्षण दिखाई पड़ते हैं ।इसमें वेद,पुराण उपनिषद, स्मृतियां, महाकाव्य और भाष्य टीकाएँ उल्लेखनीय हैं। सनातन धर्म में दो तत्वों का सम्मिलन दिग्दर्शित होता है -प्रथम देवत् तत्व और द्वितीय ज्ञान तत्व ।यह अखिल विश्व में हिंदू धर्म के नाम से भी वर्तमान में जाना वह पहचाना जाता है।

हम सब यह जानते हैं कि समाज निरंतर विकासशील व प्रगतिगामी होता है परिणामतः वैदिक काल के बाद के समय में सनातन धर्म का भी रूप प्रगतिगामी दृष्टिगोचर होता है। भारतीय महाकाव्यों में तो सनातन धर्म के विषय में विशद मीमांसा की गई है जिसमें विष्णु का विशेष उल्लेख है ।भगवत गीता सनातन को अनादि काल से समीकृत करता है। सनातन धर्म का प्राचीन स्रोत ऋग्वेद है जो 7500 ईसा पूर्व के लगभग का है। मनु ने वेद को धर्म का संपूर्ण मूल मानते हुए कहते हैं कि वेदों धर्म अखिलोमूलम।[3] ऐसी ही परिचर्चा गौतम धर्म सूत्र में भी मिलती है। मनु का मत है कि धर्म के चार स्रोत हैं[4]

1) वेद - इसको श्रुति की संज्ञा देते हैं।

2) स्मृतियां - इसे स्मार्त कहते हैं

3) सदाचार -इसे अच्छे लोगों की संगति से संपृक्त किया गया हैं

4) आत्मतुष्टि -अर्थात दूसरों को वैसे ही व्यवहार दीजिए जैसा अपने साथ चाहते हैं ।इससे संबंधित यह श्लोक उल्लेखनीय है आत्मानं प्रतिकूलामि परेषां ना समाचारेत।[5]

कुल मिलाकर धर्म सदैव नैतिकता के आचरण की एक पूरी कहानी है जिसमें मानव जीवन का निर्वाह आनंद से परिपूर्णता के साथ हो। वेद-वेदांगो स्मृतियों में वर्णित कर्तब्यों का सम्यक शुचिता व पवित्रता से निर्वहन करना ही धर्म है। धर्म को ऋग्वेद में जहां संज्ञा व विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया गया है वहीं इसका प्रयोग ऋग्वेद में पुल्लिंग और नपुंसक लिंगों में भी किया गया। कहीं इसको क्रिया संस्कार के रूप में समीकृत किया गया तो कहीं इसे आचरण के नियमावली से जोड़ा गया।[6] छांदोग्य उपनिषद में धर्म की तीन शाखाएं बताई गई[7]-नं

1) यज्ञ, अध्ययन व दान

2) तपस्या

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

3) ब्रह्मचारित्व

उपनिषद में धर्म को सत्यम वद् धर्मम्चर[8] के रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

मनुस्मृति के भाष्यकार मेधातिथि धर्म के स्वरूपों की चर्चा करते हुए पांच कोटियों या विभागों की बात करते हैं जो इस प्रकार हैं[9] -

1) वर्ण धर्म

2) आश्रम धर्म

3) वर्णश्रम धर्म

4) नैमित्तिक धर्म

5) गुण धर्म।

मनु दशलक्षणात्मक धर्म की परिचर्चा करते हुए - धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रियनिग्रह, विद्या, सत्य, अक्रोध और धी का उल्लेख करते हैं।

इस सनातन धर्म को विद्वानों ने श्रुति धर्म, स्मार्त धर्म और सदाचीर्ण धर्म जैसे भागों में भी विभाजित किया है[10] इसके कारको में विचारकों के अपने-अपने विश्वास एवं मान्यतायें थी । सनातन धर्म को मुख्ता दो भागों में बांटा जा सकता है जो इस प्रकार है -

1). सामान्य धर्म - यह ऐसा धर्म है जो जन सामान्य के लिए है । इसके अंतर्गत आचरण नियम अटल रहते हैं अर्थात यह धर्म व्यक्ति, समय ,स्थान और वातावरण के सापेक्ष नहीं होता है । इसकी मूल प्रवृत्तियों में मानवता सन्निहित रहती है तथा हर धर्म अनुरागी के लिए मानने व उस पर चलने के योग्य होती है। इस साधारण धर्म का अन्य धर्म की तरह उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति ही है इसलिए समस्त जन को सदगुण का विकास करते रहना पड़ता है। इस प्रकार के धर्म अर्थात नित्य / साधारण धर्म के तीन दर्जन से अनधिक लक्षणों[113] का वर्णन सनातन साहित्य में मिलता है जिसमें कुछ इस प्रकार हैं- सत्य अनुगामी होना, करूणायुक्त होना ,कष्ट के प्रति सहिष्णु होना, विवेकी होना, मन की चंचलता पर नियंत्रण, सेवा की भावना, सांसारिक
उपलब्धियों के प्रति उदासीनता, ईश्वर के प्रति समर्पित भाव आदि।

सनातन धर्म के दस लक्षणों का विशेष महत्व है जो इस प्रकार हैं-

क).सत्य- इसका तात्पर्य है की जो तीनों कालों से अबाधित हो। यह अत्यंत श्रेष्ठ भी है। इसके अंतर्गत दान ,ध्यान, सहिष्णुता, लज्जा ,श्रुति, दया ,अहिंसा ,विवेक आदि समाविष्ट हैं। व्यक्ति को कभी भी अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए[12]_

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

ख). ब्रह्मचर्य[13] -यह तपस्वी जीवन का मार्ग है जिसमें ब्रह्म मार्ग ही अनुकरणीय होता है । इसके अंतर्गत मन पर नियंत्रण रखना विशेष उल्लेखनीय है ।पुराणों में कहा गया है कि सभी प्रकार की यौन गतिविधियों से दूर रहना ब्रह्मचर्य है । ब्रह्मचर्य के आठ नियमों का भी उल्लेख प्राप्त होता हैं। ग).अहिंसा- किसी भी व्यक्ति को अपने शब्द व कर्म से आहत ना करना ही अहिंसा है।

ग).इंद्रिय निग्रह- अपने सभी कर्म इंद्रियों को संयमित रखना ही इंद्रियनिग्रह है । इसकी मूल भावना है कि व्यक्ति विषय आसक्ति से दूर रहे। घ).क्षमा -इसे क्रोध से मुक्ति माना जाता है यह नकारात्मक भावनाओं से छुटकारा दिलाता है तथा आंतरिक शांति का मार्ग प्रशस्त करता है।

च).श्रद्धा- व्यक्ति को अपने माता-पिता और गुरुओं के प्रति श्रद्धा का भाव सदा रखना चाहिए। छ).मधुर वचन- व्यक्ति को दान व संभाषण के समय मधुर वचन बोलना चाहिए।

ज).शील - मनुष्य के व्यक्तित्व में शील का अत्याधिक महत्व है। शीलवन पुरुष सदैव मान प्राप्त करता है।

झ)अतिथि सेवा - इसका उल्लेख पंच महायज्ञों में मिलता है । जो व्यक्ति अतिथि सेवा करता है वह योग्य व उत्तम व्यक्ति माना जाता है। अतिथि को देव के तुल्य माना जाता है।

2). विशिष्ट धर्म - इसके अंतर्गत धर्म देश काल व परिस्थितियों के सापेक्ष होता है अर्थात नियमों में लोचशीलता पाई जाती है। इसके अंतर्गत- वर्ण धर्म, आश्रम धर्म, गुण. धर्म नैमित्तिक धर्म, आपद्धर्म युग धर्म राजधर्म स्वधर्म उल्लेखनीय है।

1). वर्ण धर्म - सनातन धर्म के अंतर्गत चार वर्णों की व्यवस्था की गई है जिसमें सभी वर्णों के कर्तव्यों का सम्यक अनुशीलन किया गया है। ब्राह्मण का काम पठन-पाठन यजन-याजन व दान देना व लेना बतलाया गया है। क्षत्रियों का धर्म प्रजा का रक्षण यज्ञ और दान देना बताया गया है ।वैश्यों का कार्य सुद लेना एवं कृषि करना निश्चित किया गया है तथा शूद्रों का कार्य उपरोक्त तीनों वर्णों की सेवा करना है।

2).आश्रम धर्म - इसके अंतर्गत चार आश्रमों की व्यवस्था की गई है ।जिसका उद्देश्य मानव जीवन को संयमित और अनुशासित बनाये रखना है। इन आश्रमों में ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास उल्लेखनीय।

3). कुल धर्म -हम सब जानते हैं कि धर्म के विकास में वंश एवं परिवार का योगदान होता है । वंश भी कतिपय आचारगत् नैतिक नियमों से संपादित होते हैं। इन्हीं नियमों का सदस्यों के मध्य क्रियान्वयन ही कुल धर्म है ।इसमें पिता का धर्म ,माता का धर्म ,पत्नी का धर्म ,पुत्र का धर्म, पुत्री का धर्म ,भ्राता का धर्म आदि उल्लेखनीय है।

4).युग धर्म- हर युग में धर्म की योजना समय के साथ नियोजित होती है। यह सत्य है कि नैतिक नियमों का में कोई बदलाव नहीं होता लेकिन सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के सम्यक संचालन हेतु नियमों में परिवर्तन

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

किया जाता रहता है। सतयुग में तप की श्रेष्ठता , त्रेता युग में ज्ञान श्रेष्ठता, द्वापर युग में यज्ञ की श्रेष्ठता और कलयुग में केवल दान की श्रेठता दिखाई पड़ती है।

5). राजधर्म[14] - सनातन धर्म में राजाओं के लिए भी नैतिक नियम बनाए गए हैं। राजा का हित केवल प्रजा के हित में संरक्षित किया गया है। उसका अपना कोई व्यक्तिगत हित नहीं होता। राजा को देवताओं के अंश से निर्मित किया गया है इसलिए कहा जाता है कि बालक राजा का भी अपमान नहीं करना चाहिए । राजा के लिए मनुस्मृति में ऐंद्र व्रत ,सूर्य व्रत ,मारुति व्रत ,चांद्र व्रत, अग्नेय व्रत और पार्थिव व्रत के पालन का आदेश दिया गया है।

6).स्वधर्म - समाज राज्य और परिवार में व्यक्ति के धर्म या कर्तव्य निश्चित है जिसे स्वधर्म कहा जाता है।

7).आपद्धर्म[15]- इसके अंतर्गत विपत्ति काल में व्यक्ति को अपना धर्म छोड़कर अन्य धर्म के कार्य करने का अधिकार दिया गया है। जिसका उल्लेख छांदोग्य उपनिषद, मनुस्मृति और महाभारत में भी दिखाई पड़ता है।

उत्तराधिकार विधि -इसके अंतर्गत सनातन धर्म में संपत्ति के उत्तराधिकार की व्यवस्था हेतु कई कानून दिखाई पड़ते हैं। जिसमें मिताक्षरा विधि श्रेष्ठ एवं भारत में स्वीकार है ।मिताक्षरा विज्ञानेश्वर की याज्ञवल्क्य की टिका पर निर्मित है। इसमें यह कहा गया है की संपत्ति पर जन्मना अधिकार होगा। इसलिए पिता को अपनी संपत्ति को बेचने का अधिकार नहीं है। भारतीय उत्तराधिकार संशोधन अधिनियम 2005 में मिताक्षरा विधि में बदलाव करते हुए बेटियों को भी पैतृक संपत्ति में अधिकार दिया गया है।[16] प्राचीन काल में बंगाल और असम में मिताक्षरा विधि लागू नहीं थी इसके स्थान पर दाय भाग विधि लागू थी जिसे जीमूतवाहन ने बनाया था। इसमें पिता अपनी संपत्ति का अकेला मालिक होता है वह चाहे तो अपनी संपत्ति को बेच सकता है। दायभाग का शाब्दिक अर्थ है पैतृक धन का विभाग।[17]

उपरोक्त अनुशीलन से यहां स्पष्ट है कि कि सनातन धर्म ऋग्वेद काल से ही प्रारंभ होकर आज तक विश्व के विभिन्न देशों में फैलते हुए अपने अनुयायियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि कर रहा है इस वृद्धि के पीछे सनातन धर्म दर्शन में निहित एक सम्यक अनुशासित जीवन शैली है । यह सनातन धर्म समाज व राज्य के अन्य धर्म से चुनौतियां अवश्य प्राप्त किया व कर रहा है किंतु गंगा जी की भांति समस्त चुनौती रूप नदियों को अपने में समाहित कर विविधता में एकता का संदेश देते हुए भारतवर्ष को बांधकर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को मजबूती प्रदान कर रहा है क्योंकि आज भारत में राष्ट्रीय एकता का आधार निश्चित ही भारतीय संस्कृति एवं धर्म परंपरा ही है । जब भी कोई धर्म किसी सनातनी को भी विधर्मी करता है तो सनातन धर्म यह व्यवस्था भी देता है कि उसे शुद्धिकरण के माध्यम से पुनः सनातन धर्म में वापस लाया जाए। सनातन धर्म में एक उदर्शीलता ,लोच शीलता ,प्रभावशीलता और जीवन जीने के तरीके का दिग्दर्शन होता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

संदर्भ ग्रंथ

1) महाकवि कालिदास: रघुवंशम् मंगलाचरण ।

2) वाचस्पत्यम् संस्कृत कोष नाग प्रकाशन दिल्ली2018 ।

3) मनुस्मृति-2.6 ।

4) वही।

5) Santa and harm foundation.org ।

6) सतवालकर,श्रीपाद दामोदर;ऋग्वेद का सुबोध भाष्य भाग चार 1.87.1,10.92.2,10.21.3 ।

काणे ,पी वी का धर्मशास्त्र का इतिहासअनु.अर्जुन चौबे पृ.3 प्रभात प्रकाशन लखनऊ 1992 ।

7) शर्मा ,अर्चना;भारतीय परंपरा मे धर्म की अवधारणा एवं मानववाद , आई जे आर एस वैल्यूम 4वर्ष 2016. ।

8) वही।

9) वही।

10) मिश्रा के के व डॉ॰ ज्योति; भारतीय संस्कृति में मानवाधिकार पृ 5-12 मिश्रा ट्रडिंग कार्पोरेशन वाराणसी2003 ।

11) मनुस्मृति 6.92

याज्ञवल्क्य स्मृति 1.22

श्रीमद्भागवत गीता के सप्तम् स्कंद में धर्म के तीस लक्षणों का इल्लेख 7.11.8-12 ।

12) मनुस्मृति4.138 ।

13) स्वामी विवेकानन्द ;ब्रम्हचर्य आत्म शक्ति की राह पृ 15-40 ग्रैपविन इंडिया दिल्ली 2005 ।

14) मनुस्मृति 9.303-11 ।

15) www.wisdomlib.org. ।

16) bharatdiscovery.org ।

17) him.wikipedia. org ।